RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ई-पाठशाला कार्यक्रम

Class 12th POLITY

# पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन

RAPID REVISION



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

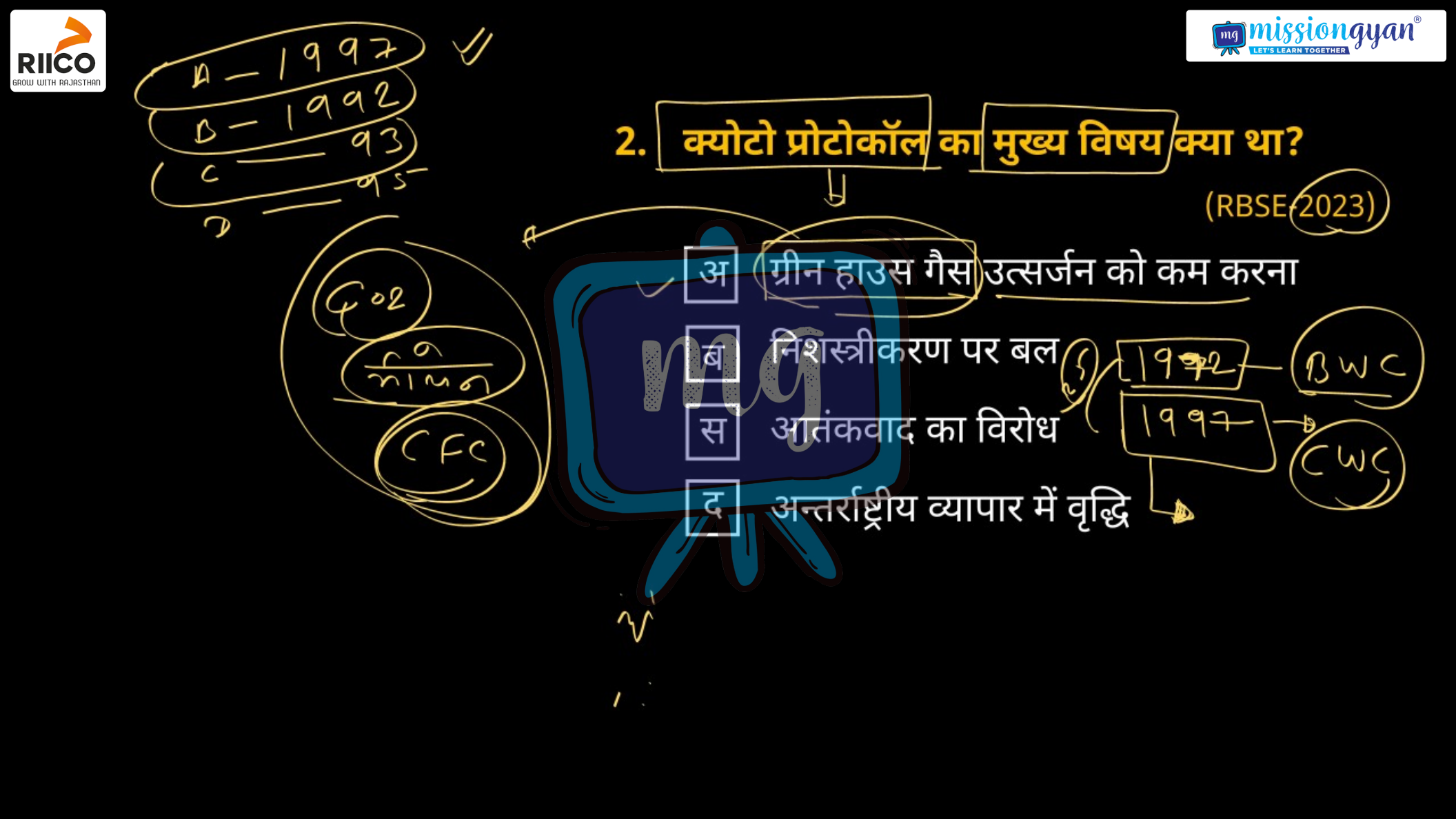
1. 1992 का पृथ्वी सम्मेलन किस देश में हुआ?

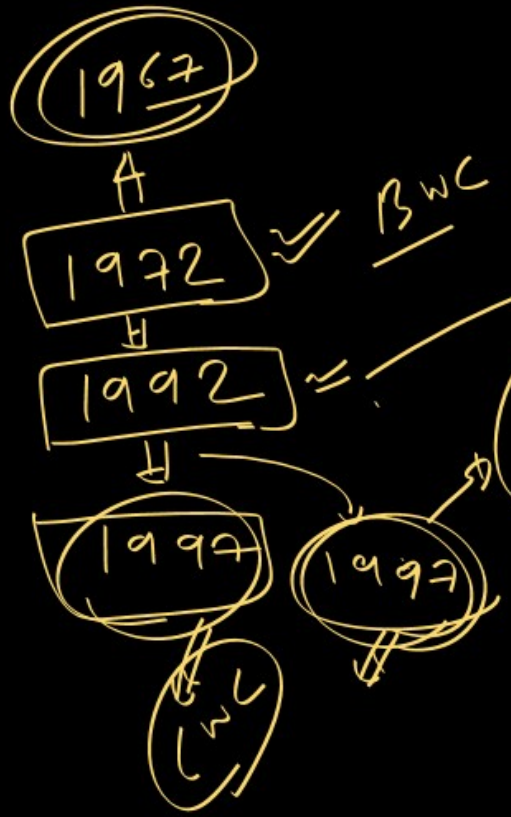
(RBSE-2022)



अ अर्जेंटीना
ब चिली
स पेरू
द ब्राजील

रियो-डि-जेनेरियो


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
A – 1997
B – 1992
C — 93
D — 95
2. क्योटो प्रोटोकॉल का मुख्य विषय क्या था?
(RBSE 2023)
अ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करना
ब निशस्त्रीकरण पर बल
स आतंकवाद का विरोध
द अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि
CO2
मीथेन
CFC
1992
BWC
1997
CWC




**3. रियो सम्मेलन का मुख्य मुद्दा क्या था?**

(RBSE-2024)

- [अ] सैन्य शक्ति पर बल
- [ब] पर्यावरण और विकास
- [स] शांति सहयोग
- [द] आतंकवाद से निपटना

4. वैश्विक तापवृद्धि में किस गैस की भूमिका नहीं है?

(RBSE 2026)

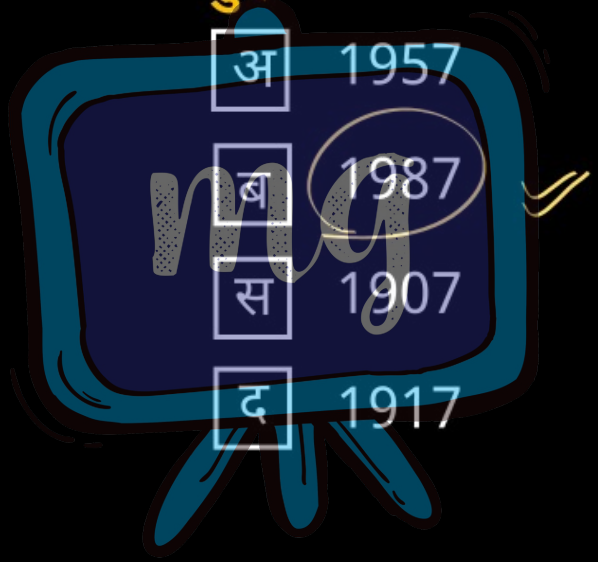
अ कार्बन डाइऑक्साइड

ब ऑक्सीजन

स मीथेन

द हाइड्रो-फ्लोरो कार्बन

5. ब्रंटलैंड रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' कब प्रकाशित हुई? (Model Paper-2024)



अ 1957

ब 1987

स 1907

द 1917

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

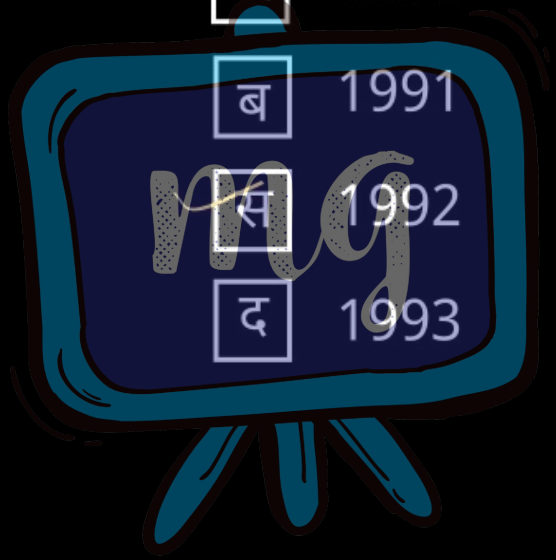
**6. पृथ्वी सम्मेलन कब हुआ?** (Model Paper-2025)

अ 1990

ब 1991

स 1992

द 1993



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

7. आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण पर होने वाले असर की चिंता ने कब से राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया?

अ 1959 के बाद

ब 1960 के दशक के बाद

स 1972 के बाद

द 1992 के बाद

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

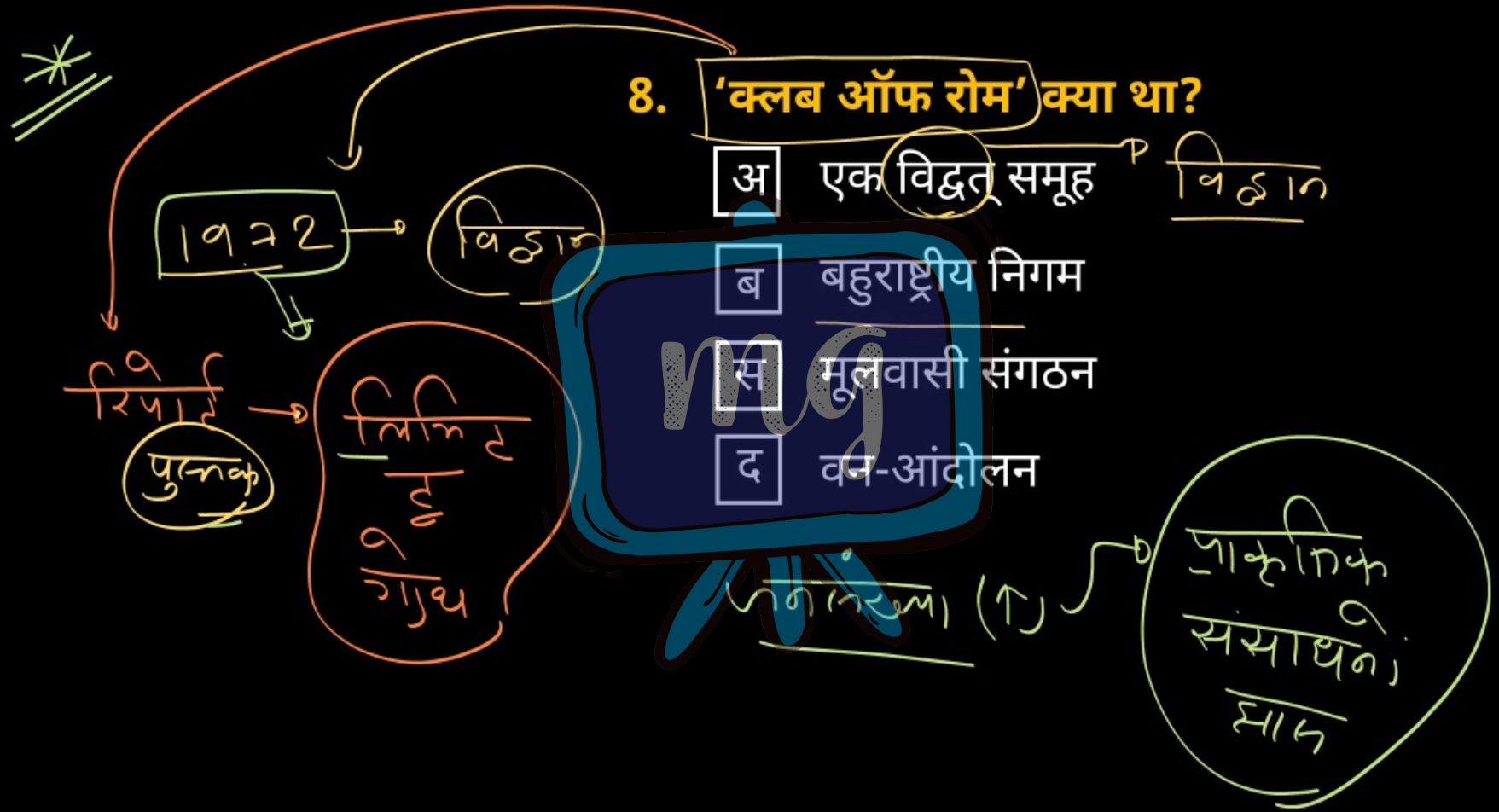
8. **'क्लब ऑफ रोम' क्या था?**

अ एक विद्वत् समूह

ब बहुराष्ट्रीय निगम

स मूलवासी संगठन

द वन-आंदोलन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

9. रियो सम्मेलन में उत्तरी देशों की मुख्य चिंता किसको लेकर थी?

(अ) ओजोन परत में छेद और वैश्विक तापवृद्धि

(ब) नदियों के प्रबंधन और खनन

(स) पावन वन-प्रांतर और वन-नीति

(द) मूलवासी पहचान और भूमि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**10. 'एजेंडा-21' की आलोचना किस आधार पर की गई?**

(अ) इसका झुकाव आर्थिक वृद्धि की ओर माना गया

(ब) इसने औद्योगीकरण समाप्त करने की बात कही

(स) इसने समुद्री परिवहन बंद करने की बात कही

(द) इसने प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग पर पूर्ण रोक लगाई

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वैश्विक

स्वामी संपदा

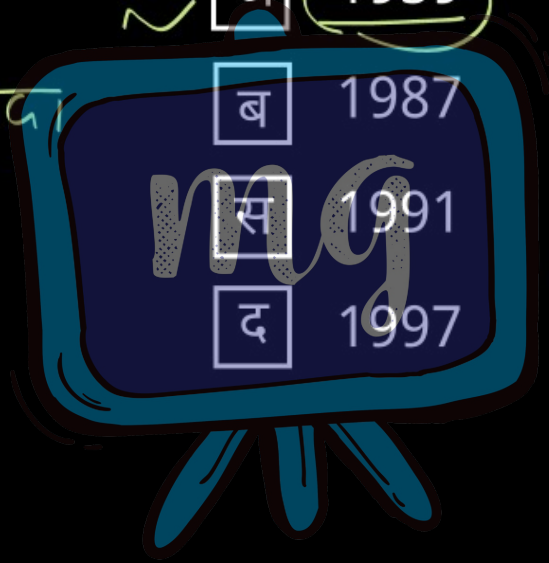
11. अंटार्कटिका संधि किस वर्ष हुई?

अ 1959

ब 1987

स 1991

द 1997



हिम

90.1

विज्ञान फल

कुल — 70.1

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

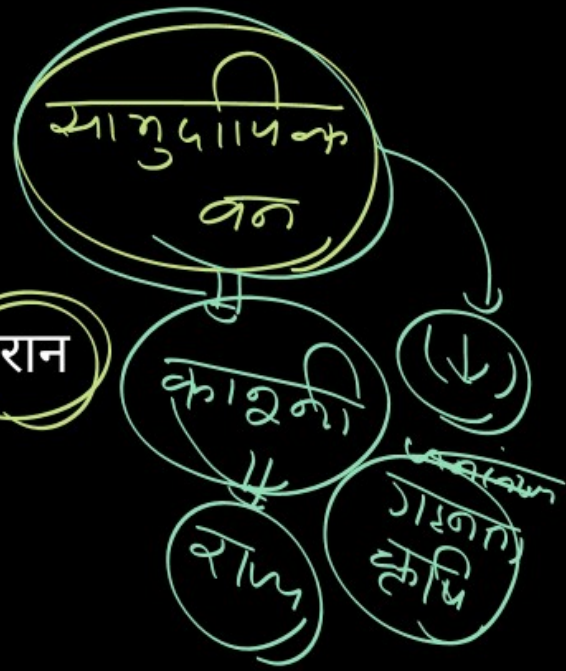
12. राजस्थान में पावन वन-प्रांतर के लिए कौन-सा नाम प्रयुक्त होता है?

(अ) काव

(ब) लिंदोह

(स) वानी, केंकड़ी और ओरान

(द) देव रहतिस



13. विश्व का पहला बाँध-विरोधी आंदोलन किस देश में चला?

अ भारत

ब ऑस्ट्रेलिया

स फिलीपिन्स

द ब्राजील

14. वैश्विक रणनीति में लगातार सबसे महत्वपूर्ण संसाधन कौन-सा रहा है?

अ तेल

ब पावन वन

स क्रिल

द लाइकेन

15. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने मूलवासियों की शुरुआती परिभाषा कब दी?

अ 1975

ब 1982

स 1992

द 2002

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## रिक्त स्थान

1. वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल का गठन 1925 में हुआ। (RBSE-2022)



2. भारत ने वर्ष _____ में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर/अनुमोदन किया। (Model Paper-2025)



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Imp

3. चिली में _____ नामक मूलवासी रहते हैं।

(Model Paper-2024)



4. 1992 का पृथ्वी सम्मेलन ब्राजील के _____ में हुआ।




रियो डि जेनेरियो

5. रियो सम्मेलन में विकास के कुछ तौर-तरीके _____ के रूप में सुझाए गए।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

6. स्थलीय हिम का 90.1% प्रतिशत अंटार्कटिका में है।



7. साझी संपदा का आकार घटने का एक कारण _____ खेती है।



8. मेघालय में पावन वन-प्रांतर को _____ कहा जाता है।




b) लिंगदाद

9. खाड़ी-क्षेत्र विश्व के कुल तेल-उत्पादन का लगभग _____ प्रतिशत मुहैया कराता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

10. दुनिया को परिवहन के लिए आवश्यक ऊर्जा का लगभग _____ प्रतिशत पेट्रोलियम से पूरा होता है।



## अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1. पृथ्वी सम्मेलन में किन्होंने भाग लिया?

(RBSE-2026)

उत्तर– 170 देश, हजारों स्वयंसेवी संगठन तथा अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों ने भाग लिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## 2. मानवता की साझी विरासत में क्या शामिल है?

(RBSE-2022)




उत्तर– वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. भारत में मूलवासी किन्हें कहा जाता है?

(RBSE-2024)



उत्तर– अनुसूचित जनजाति अथवा आदिवासी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## 4. क्योटो प्रोटोकॉल का लक्ष्य क्या था?

(Model Paper-2023)

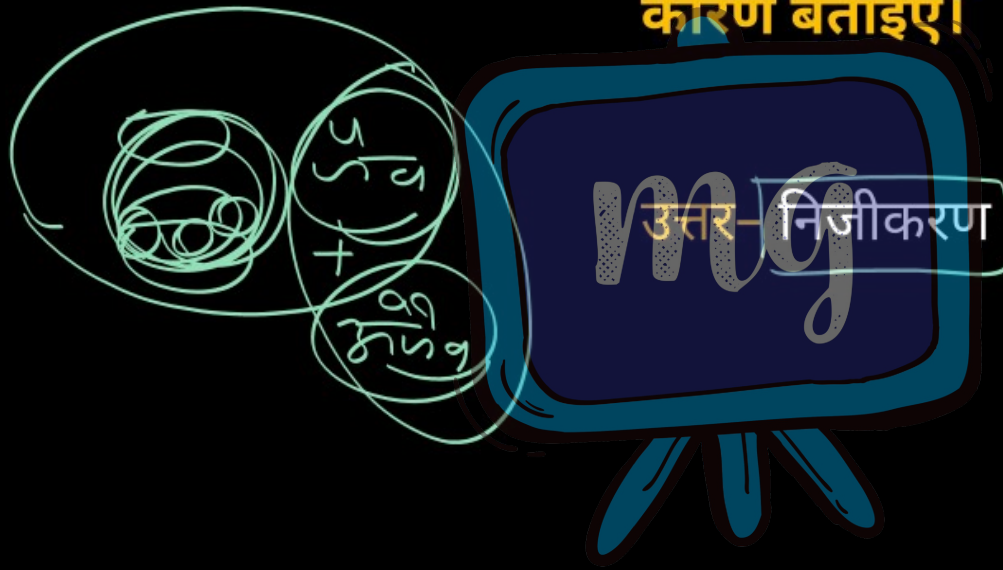


उत्तर– औद्योगिक देशों के ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

**5. विश्व की साझी संपदा का आकार घटने के दो कारण बताइए!** (Model Paper-2023)



उत्तर– निजीकरण और पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## 6. साझी संपदा क्या है? (Model Paper-2024)



उत्तर– ऐसी संपदा जिस पर समूह के प्रत्येक सदस्य का स्वामित्व हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## 7. भारत में 'पावन वन-प्रांतर' का अर्थ क्या है?

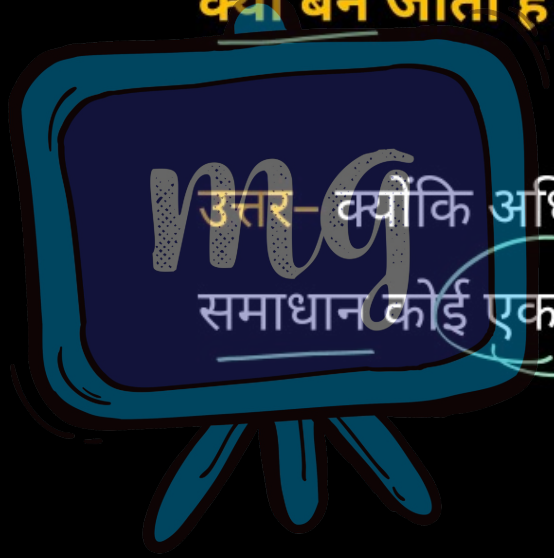


उत्तर– ऐसे वन-प्रांतर जिन्हें धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण संरक्षित रखा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## 8. पर्यावरणीय समस्याएँ विश्व-राजनीति का हिस्सा क्यों बन जाती हैं?



उत्तर– क्योंकि अधिकांश पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान कोई एक देश अकेले नहीं कर सकता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

9. विश्व का पहला बाँध-विरोधी आंदोलन किस नदी से संबंधित था?



आस्ट्रेलिया

उत्तर– फ्रैंकलिन नदी।

10. 'जलयुद्ध' शब्द किस स्थिति को इंगित करता है?



उत्तर– स्वच्छ जल-संसाधनों को लेकर संभावित हिंसक संघर्ष को।

## लघुत्तरात्मक प्रश्न

**1. पर्यावरण संरक्षण में भारत के योगदान के दो बिंदु बताइए।** (RBSE-2024)

**उत्तर :**

1. क्योटो प्रोटोकॉल का अनुमोदन — भारत ने 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए और इसका अनुमोदन किया।
2. स्वच्छतर ईंधन को बढ़ावा — भारत ने 'नेशनल ऑटो-फ्यूल पॉलिसी' के अंतर्गत वाहनों के लिए स्वच्छतर ईंधन अनिवार्य किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

## 2. अंटार्कटिका पर स्वामित्व का मसला विवादास्पद क्यों है?

(RBSE-2025)

**उत्तर :**

1. **संप्रभु अधिकार का दावा** — कुछ देशों ने अंटार्कटिका पर अपने संप्रभु अधिकार का वैधानिक दावा किया।
2. **दावा करने वाले देश** — इनमें ब्रिटेन, अर्जेन्टीना, चिले, नार्वे, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल थे।
3. **साझी संपदा का दृष्टिकोण** — अधिकांश अन्य देशों ने अंटार्कटिका को विश्व की साझी संपदा माना।
4. **क्षेत्राधिकार पर मतभेद** — इन अलग-अलग दावों के कारण अंटार्कटिका के स्वामित्व को लेकर विवाद बना रहा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

**3. खनिज उद्योगों से पर्यावरण को दो हानियाँ बताइए।**

(RBSE-2023)

**उत्तर :**

1. भूमि और जलमार्गों का प्रदूषण — खनिज उद्योग रसायनों का भरपूर उपयोग करता है तथा भूमि और जलमार्गों को प्रAदूषित करता है।
2. स्थानीय वनस्पतियों का विनाश — खनिज उद्योग के कारण स्थानीय वनस्पतियों को नुकसान पहुँचता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**4. क्योटो प्रोटोकॉल क्या है?** (Model Paper-2025)

**उत्तर :**

1. अंतर्राष्ट्रीय समझौता — क्योटो प्रोटोकॉल एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है।
2. औद्योगिक देश — इसके अंतर्गत औद्योगिक देशों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए।
3. मुख्य उद्देश्य — ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करना इसका लक्ष्य है।
4. सहमति वर्ष — जापान के क्योटो में 1997 में इस पर सहमति बनी।

**5. ग्लोबल वार्मिंग (विश्वव्यापी तापवृद्धि) का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? कोई दो उदाहरण दीजिए।**

(RBSE-2026)

**उत्तर:**

1. तापमान में वृद्धि — ग्लोबल वार्मिंग की परिघटना में विश्व का तापमान बढ़ता है।
2. जीवन पर खतरा — Chapter Content के अनुसार वैश्विक तापवृद्धि धरती के जीवन के लिए प्रलयंकारी साबित हो सकती है।

**6. वैश्विक संपदा अथवा मानवता की साझी विरासत क्या है?** (Model Paper-2026)

**उत्तर :**

1. वैश्विक संपदा — ऐसे क्षेत्र जो किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं।
2. साझा प्रबंधन — इनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे रूप में किया जाता है।
3. वायुमंडल और अंटार्कटिका — पृथ्वी का वायुमंडल तथा अंटार्कटिका इस संपदा में शामिल हैं।
4. समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष — इन्हें भी मानवता की साझी विरासत माना जाता है।

**7. मूलवासी से क्या समझते हैं?** (Model Paper-2023)

**उत्तर :**

1. मूलवासी का अर्थ — मूलवासी ऐसे लोगों के वंशज हैं जो किसी देश में लंबे समय से रहते चले आ रहे थे।
2. अधीनता की स्थिति — बाद में दूसरी संस्कृति या जातीय मूल के लोगों ने उस देश में आकर इन्हें अपने अधीन कर लिया।
3. सांस्कृतिक परंपराएँ — मूलवासी अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक रिवाजों को महत्त्व देते हैं।
4. विशिष्ट जीवन-पद्धति — ये अपने विशेष सामाजिक और आर्थिक ढर्रे पर जीवनयापन करना पसंद करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**8. रियो सम्मेलन में उत्तरी और दक्षिणी देशों के पर्यावरणीय एजेंडे में क्या अंतर था?**

**उत्तर :**

1. उत्तरी देश — उत्तरी गोलार्द्ध के देश मुख्यतः धनी और विकसित देश थे।
2. उत्तरी देशों की चिंता — इनकी प्रमुख चिंता ओजोन परत में छेद और वैश्विक तापवृद्धि थी।
3. दक्षिणी देश — दक्षिणी गोलार्द्ध के देश मुख्यतः गरीब और विकासशील देश थे।
4. दक्षिणी देशों की चिंता — इनकी मुख्य चिंता आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन के आपसी संबंध को सुलझाना था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**9. पश्चिम एशिया का तेल की दृष्टि से महत्त्व बताइए।**

**उत्तर :**

1. तेल उत्पादन — खाड़ी-क्षेत्र विश्व के कुल तेल-उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत उपलब्ध कराता है।
2. तेल-भंडार — विश्व के ज्ञात तेल-भंडार का लगभग 64 प्रतिशत इस क्षेत्र में मौजूद है।
3. सऊदी अरब — Chapter Content के अनुसार सऊदी अरब के पास विश्व के कुल तेल-भंडार का लगभग एक चौथाई हिस्सा है।
4. इराक — Chapter Content में इराक का ज्ञात तेल-भंडार सऊदी अरब के बाद दूसरे स्थान पर बताया गया है।

**10. विकास परियोजनाओं का भारत के मूलवासी समुदायों पर क्या प्रभाव पड़ा?**

**उत्तर :**

1. संवैधानिक सुरक्षा — राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संबंध में आदिवासी समुदायों को संवैधानिक सुरक्षा प्राप्त है।
2. विकास का सीमित लाभ — इसके बावजूद देश के विकास का इन्हें अधिक लाभ नहीं मिल सका।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. विकास परियोजनाओं से विस्थापन — स्वतंत्रता के बाद अनेक विकास परियोजनाओं के कारण बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हुए।
4. आदिवासियों पर प्रभाव — इन परियोजनाओं से विस्थापित होने वालों में आदिवासी समुदाय का हिस्सा सबसे बड़ा रहा।
5. विकास की कीमत — Chapter Content के अनुसार मूलवासी समुदायों ने विकास की बहुत बड़ी कीमत चुकाई है।

## दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

**1. वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की चिंता क्यों आवश्यक है?**

उत्तर- पर्यावरण की समस्याएँ मानव जीवन, प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती हैं। अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान कोई एक देश अकेले नहीं कर सकता।

मुख्य बिंदु:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. कृषि भूमि की समस्या — कृषि योग्य भूमि नहीं बढ़ रही है और उपजाऊ जमीन की उर्वरता कम हो रही है।
2. संसाधनों में कमी — चारागाहों के चारे, मत्स्य-भंडार और जलाशयों की जलराशि में कमी आ रही है।
3. स्वच्छ जल की कमी — विकासशील देशों की बड़ी आबादी स्वच्छ जल और साफ-सफाई की सुविधाओं से वंचित है।
4. वनों की कटाई — प्राकृतिक वनों की कटाई से जलवायु एवं जलचक्र का संतुलन प्रभावित हो रहा है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. जैव-विविधता की हानि — जैव-प्रजातियों से समृद्ध पर्यावासों का विनाश हो रहा है।
6. ओजोन परत में कमी — इससे पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर खतरा बढ़ रहा है।
7. समुद्री प्रदूषण — समुद्रतटीय क्षेत्रों में प्रदूषण बढ़ने से समुद्री पर्यावरण की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है।
8. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता — अधिकांश पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान एक देश अकेले नहीं कर सकता।

**2. भारत में पावन वन-प्रांतर की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए।** (RBSE-2026)

**उत्तर–** भारत के पुराने समाजों में धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण प्रकृति की रक्षा करने की परंपरा रही है। पावन वन-प्रांतर इस परंपरा के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।

मुख्य बिंदु:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. पावन वन-प्रांतर की अवधारणा — ऐसे वन क्षेत्र जिन्हें धार्मिक मान्यताओं के कारण संरक्षित रखा जाता है।
2. वनों की कटाई पर रोक — इन स्थानों पर वनों के कुछ हिस्सों को काटा नहीं जाता।
3. धार्मिक विश्वास — यहाँ देवता अथवा किसी पुण्यात्मा का वास माना जाता है।
4. सामुदायिक प्रबंधन — दक्षिण भारत में इन वन-प्रांतरों का प्रबंधन परंपरागत रूप से ग्रामीण समुदाय करता आया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. पारिस्थितिकी संतुलन — यह व्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने से संबंधित है।
6. जैव-विविधता संरक्षण — देवस्थान की मान्यता जैव-विविधता और पारिस्थितिकी संरक्षण में मदद कर सकती है।
7. सांस्कृतिक वैविध्य — इससे सांस्कृतिक वैविध्य बनाए रखने में भी सहायता मिल सकती है।
8. संरक्षण का मूल आधार — इन वन-प्रांतरों को बचाने का आधार संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा थी।

**3. विश्व के विभिन्न भागों में खनिज उद्योगों का विरोध क्यों होता है?** (RBSE-2026)

**उत्तर–** खनिज उद्योग पृथ्वी के सबसे ताकतवर उद्योगों में शामिल है। यह धरती के भीतर के संसाधनों को बाहर निकालता है और इसकी गतिविधियों से पर्यावरण तथा स्थानीय समुदाय प्रभावित होते हैं।

मुख्य बिंदु:

1. संसाधनों का दोहन — खनिज उद्योग धरती के भीतर मौजूद संसाधनों को बाहर निकालता है।
2. रसायनों का उपयोग — उद्योग में बड़ी मात्रा में रसायनों का उपयोग होता है।
3. भूमि प्रदूषण — खनिज उद्योग भूमि को प्रदूषित करता है।
4. जलमार्गों का प्रदूषण — इसकी गतिविधियों से जलमार्ग प्रदूषित होते हैं।

5. वनस्पतियों का विनाश — खनन के कारण स्थानीय वनस्पतियों का विनाश होता है।
6. जन-समुदायों का विस्थापन — खनिज उद्योग की गतिविधियों के कारण स्थानीय समुदायों को विस्थापित होना पड़ता है।
7. आदिवासी अधिकारों का प्रश्न — खनिज उद्योग के विरोध में आदिवासियों के बुनियादी अधिकारों का मुद्दा भी जुड़ा हुआ है।

**4. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में भारत द्वारा किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालिए।**

(RBSE-2026)

**उत्तर–** भारत ने वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भाग लेते हुए विभिन्न समझौतों, कानूनों तथा स्वच्छ ऊर्जा से संबंधित कार्यक्रमों को अपनाया है।

मुख्य बिंदु:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. क्योटो प्रोटोकॉल का अनुमोदन — भारत ने 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए और इसका अनुमोदन किया।
2. नेशनल ऑटो-फ्यूल पॉलिसी — इसके अंतर्गत भारत ने वाहनों के लिए स्वच्छतर ईंधन अनिवार्य किया।
3. ऊर्जा-संरक्षण अधिनियम, 2001 — ऊर्जा के अधिक कारगर उपयोग को बढ़ावा दिया गया।
4. बिजली अधिनियम, 2003 — नवीकरणीय ऊर्जा के इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. प्राकृतिक गैस — प्राकृतिक गैस के आयात की दिशा में रुझान बढ़ा।
6. स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी — स्वच्छ कोयले के उपयोग पर आधारित प्रौद्योगिकी अपनाने की दिशा में प्रयास किए गए।
7. पेरिस जलवायु समझौता — भारत ने 2 अक्तूबर 2016 को इस समझौते का अनुमोदन किया।
8. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग — भारत ने विकसित देशों से विकासशील देशों को वित्तीय संसाधन तथा स्वच्छ प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल दिया।

**5. संसाधनों की भू-राजनीति क्या है?** (Model Paper-2026)

**उत्तर-** संसाधनों की भू-राजनीति इस प्रश्न से संबंधित है कि किसे, क्या, कब, कहाँ और कैसे हासिल होता है। इसमें संसाधनों की उपलब्धता, उपयोग और नियंत्रण से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संबंधों की चर्चा की जाती है।

मुख्य बिंदु:

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. संसाधनों की भू-राजनीति का अर्थ — यह “किसे, क्या, कब, कहाँ और कैसे हासिल होता है” जैसे प्रश्नों से संबंधित है।
2. यूरोपीय शक्तियों का विस्तार — संसाधन यूरोपीय शक्तियों के विश्वव्यापी प्रसार का प्रमुख साधन और उद्देश्य रहे।
3. राज्यों के बीच संघर्ष — संसाधनों को लेकर विभिन्न राज्यों के बीच तनातनी रही है।

4. पश्चिमी दृष्टिकोण — पश्चिमी दुनिया ने संसाधनों की भू-राजनीति को व्यापारिक संबंधों, युद्ध और ताकत के संदर्भ में देखा।
5. समुद्री नौवहन — विदेशों में संसाधनों की उपलब्धता और समुद्री नौवहन में दक्षता महत्त्वपूर्ण रही।
6. तेल का सामरिक महत्त्व — दोनों विश्वयुद्धों में तेल की निर्बाध आपूर्ति का महत्त्व स्पष्ट हुआ।
7. सुरक्षित आपूर्ति — शीतयुद्ध के बाद भी सरकारों की प्रमुख चिंता संसाधनों की सुरक्षित आपूर्ति बनाए रखना रही।

## निबंधात्मक प्रश्न

1. **पृथ्वी सम्मेलन की पृष्ठभूमि, प्रमुख मुद्दों और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।**

उत्तर– 1992 में ब्राजील के रियो डी जनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया। यह सम्मेलन पर्यावरण और विकास के मुद्दों पर केंद्रित था। इसने वैश्विक राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताओं को ठोस रूप दिया।

1. पृथ्वी सम्मेलन की पृष्ठभूमि

- 1960 का दशक — आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की चिंता ने राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया।
- क्लब ऑफ रोम — इस विद्वत् समूह ने 1972 में 'लिमिट्स टू ग्रोथ' पुस्तक प्रकाशित की।
- ब्रंटलैंड रिपोर्ट, 1987 — 'अवर कॉमन फ्यूचर' शीर्षक वाली रिपोर्ट ने आर्थिक विकास के प्रचलित तरीकों के टिकाऊ न होने की चेतावनी दी।

2. सम्मेलन का आयोजन

- आयोजन वर्ष — 1992
- आयोजन स्थल — रियो डी जनेरियो, ब्राजील
- भागीदारी — 170 देश, हजारों स्वयंसेवी संगठन तथा अनेक बहुराष्ट्रीय निगम शामिल हुए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे

- ओजोन परत — उत्तरी देशों की मुख्य चिंता ओजोन परत में छेद को लेकर थी।
- वैश्विक तापवृद्धि — विकसित देशों के लिए ग्लोबल वार्मिंग महत्त्वपूर्ण विषय था।
- आर्थिक विकास — दक्षिणी देश आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन के बीच संबंध को सुलझाने के लिए अधिक चिंतित थे।

4. सम्मेलन के प्रमुख परिणाम
   - जलवायु-परिवर्तन — इससे संबंधित नियमाचार निर्धारित हुए।
   - जैव-विविधता — जैव-विविधता के संरक्षण संबंधी नियमाचार बने।
   - वानिकी — वनों से संबंधित नियमाचार निर्धारित किए गए।
   - एजेंडा-21 — विकास के कुछ तौर-तरीके सुझाए गए।

5. टिकाऊ विकास की अवधारणा

- मुख्य अर्थ — आर्थिक वृद्धि का ऐसा तरीका जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे।
- सम्मेलन की सहमति — पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना आर्थिक वृद्धि करने पर सहमति बनी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

6. प्रमुख कठिनाइयाँ
   - उत्तर-दक्षिण मतभेद — विकसित और विकासशील देशों के पर्यावरणीय एजेंडे अलग-अलग रहे।
   - क्रियान्वयन की चुनौती — टिकाऊ विकास को व्यवहार में लागू करने के तरीकों पर कठिनाइयाँ बनी रहीं।
   - एजेंडा-21 की आलोचना — कुछ आलोचकों ने इसे पर्यावरण संरक्षण की अपेक्षा आर्थिक वृद्धि की ओर अधिक झुका हुआ माना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

**2. 'विश्व की साझी संपदा' की अवधारणा तथा उसकी सुरक्षा की चुनौतियों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–** विश्व की साझी संपदा या मानवता की साझी विरासत ऐसे क्षेत्रों को कहते हैं जो किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं। इनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे रूप में किया जाता है।

1. विश्व की साझी संपदा की अवधारणा
   - साझा अधिकार — ये क्षेत्र किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार में नहीं आते।
   - साझा प्रबंधन — इनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है।
2. विश्व की साझी संपदा के उदाहरण
   - पृथ्वी का वायुमंडल — मानवता की साझी विरासत का हिस्सा है।
   - अंटार्कटिका — वैश्विक संपदा का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है।
   - समुद्री सतह — वैश्विक संपदा में शामिल है।
   - बाहरी अंतरिक्ष — मानवता की साझी विरासत माना जाता है।

3. वैश्विक संपदा की सुरक्षा के प्रमुख प्रयास

- अंटार्कटिका संधि, 1959 — अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का महत्त्वपूर्ण प्रयास।
- मांट्रियल न्यायाचार, 1987 — वैश्विक संपदा की सुरक्षा से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय समझौता।
- अंटार्कटिका पर्यावरणीय न्यायाचार, 1991 — अंटार्कटिका की पर्यावरण-सुरक्षा की दिशा में प्रयास।

4. वैश्विक संपदा की सुरक्षा की चुनौतियाँ
   - वैज्ञानिक साक्ष्यों की अनिश्चितता — पारिस्थितिकी संबंधी समस्याओं के वैज्ञानिक प्रमाण अपुष्ट होने के कारण मतभेद उत्पन्न होते हैं।
   - समय-सीमा संबंधी मतभेद — पर्यावरणीय समस्याओं की समय-सीमा पर सहमति बनाना कठिन होता है।
   - सर्व-सामान्य एजेंडे की समस्या — विभिन्न देशों के बीच एक समान पर्यावरणीय एजेंडा तय करना कठिन है।

5. उत्तर-दक्षिण असमानता

- प्रौद्योगिकी का अंतर — बाहरी अंतरिक्ष के प्रबंधन में प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास महत्त्वपूर्ण हैं।
- असमान लाभ — अंतरिक्ष में होने वाले दोहन-कार्यों के लाभ वर्तमान पीढ़ी में सभी को समान रूप से प्राप्त नहीं होते।
- भावी पीढ़ियाँ — भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी लाभों का वितरण समान नहीं है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

**2. समकालीन पर्यावरण आंदोलनों की विविधता को वन, खनिज और बाँध आंदोलनों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–**

विरासत ऐसे क्षेत्रों को कहते हैं जो किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं। इनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे रूप में किया जाता है।

1. पर्यावरण आंदोलनों का स्वरूप

- स्थानीय स्तर — अनेक कार्यकर्ता स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय समस्याओं के विरुद्ध सक्रिय हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर — कुछ पर्यावरण-सचेत कार्यकर्ता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय हैं।
- विविधता — इन आंदोलनों की प्रमुख विशेषता इनकी विविधता है।

2. वन-आंदोलन

- दक्षिणी देश — मैक्सिको, चिले, ब्राजील, मलेशिया, इंडोनेशिया, अफ्रीका और भारत में वन-आंदोलन सक्रिय रहे हैं।
- वनों की कटाई — अनेक दक्षिणी देशों में वनों की कटाई खतरनाक गति से जारी है।
- वन्यजीव संरक्षण — भारत में बंगाल-टाइगर और फिलीपिन्स में गरुड़ तथा अन्य शिकारी पक्षियों के संरक्षण के लिए अभियान चलाए गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. खनिज उद्योग विरोधी आंदोलन
   - रसायनों का उपयोग — खनिज उद्योग में रसायनों का भरपूर उपयोग किया जाता है।
   - प्रदूषण — खनिज उद्योग भूमि और जलमार्गों को प्रदूषित करता है।
   - विस्थापन — इससे स्थानीय जन-समुदायों को विस्थापित होना पड़ता है।
   - फिलीपिन्स का उदाहरण — वेस्टर्न माइनिंग कारपोरेशन के खिलाफ अनेक समूहों और संगठनों ने अभियान चलाया।

4. बाँध-विरोधी आंदोलन
   - बड़े बाँधों का विरोध — ये आंदोलन बड़े बाँधों के निर्माण का विरोध करते हैं।
   - नदी संरक्षण — इनके अंतर्गत नदियों और नदी-घाटियों के टिकाऊ तथा न्यायसंगत प्रबंधन की माँग उठती है।
   - फ्रैंकलिन नदी आंदोलन — ऑस्ट्रेलिया में यह आंदोलन फ्रैंकलिन नदी तथा आसपास के वनों को बचाने के लिए चला।
   - नर्मदा आंदोलन — भारत का सबसे प्रसिद्ध बाँध-विरोधी तथा नदी हितैषी आंदोलन है।

5. पर्यावरण आंदोलनों का महत्त्व

- पर्यावरण आंदोलनों का महत्त्व
  - नए विचार — इन आंदोलनों से नए राजनीतिक और सामाजिक विचार उत्पन्न होते हैं।
  - संसाधन-प्रबंधन — इनमें प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ और न्यायसंगत प्रबंधन का प्रश्न उठता है।

**4. संसाधनों की भू-राजनीति के ऐतिहासिक विकास का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–**

1. यूरोपीय शक्तियों का विश्वव्यापी विस्तार
   - संसाधनों का महत्त्व — संसाधन यूरोपीय शक्तियों के विश्वव्यापी प्रसार के प्रमुख साधन और उद्देश्य रहे।
   - राज्यों के बीच तनातनी — संसाधनों को लेकर विभिन्न राज्यों में संघर्ष हुए।
   - पश्चिमी दृष्टिकोण — संसाधनों को व्यापार, युद्ध और ताकत के संदर्भ में देखा गया।

2. समुद्री नौवहन और इमारती लकड़ी

- समुद्री नौवहन — विदेशी संसाधनों तक पहुँचने का महत्त्वपूर्ण साधन था।
- इमारती लकड़ी — जहाजों की शहतीरों के निर्माण के लिए आवश्यक थी।
- 17वीं सदी — इस अवधि से इमारती लकड़ी की आपूर्ति यूरोपीय शक्तियों की प्रमुख प्राथमिकता बनी।

3. प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध

- सामरिक संसाधन — विश्वयुद्धों में सामरिक संसाधनों का महत्त्व स्पष्ट हुआ।
- तेल की आपूर्ति — दोनों विश्वयुद्धों के दौरान तेल की निर्बाध आपूर्ति की आवश्यकता सामने आई।

4. शीतयुद्ध काल

- सैन्य तैनाती — संसाधन-दोहन क्षेत्रों और समुद्री परिवहन-मार्गों के आसपास सेना तैनात की गई।
- संसाधनों का भंडारण — महत्त्वपूर्ण संसाधनों का भंडारण किया गया।
- अनुकूल सरकारें — संसाधन-उत्पादक देशों में मनपसंद सरकारों की बहाली को समर्थन दिया गया।
- बहुराष्ट्रीय निगम — निगमों तथा हितसाधक अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को समर्थन दिया गया।

5. शीतयुद्ध के बाद की स्थिति

- सुरक्षित आपूर्ति — सोवियत संघ के विघटन के बाद प्रमुख चिंता संसाधनों की सुरक्षित आपूर्ति बनाए रखना बनी रही।
- रेडियोधर्मी खनिज — इनसे संबंधित व्यावसायिक निर्णय भी सरकारों की चिंता का विषय बने।
- तेल का महत्त्व — वैश्विक रणनीति में तेल सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन बना रहा।

**5. मूलवासियों का प्रश्न पर्यावरण, संसाधन और राजनीति को किस प्रकार एक साथ जोड़ता है?**

**उत्तर–** मूलवासी समुदायों का जीवन भूमि और प्राकृतिक संसाधनों से गहराई से जुड़ा हुआ है। ये समुदाय अपनी स्वतंत्र पहचान, मूल वासस्थान पर अधिकार तथा विश्व-बिरादरी में बराबरी का दर्जा चाहते हैं।

1. मूलवासियों का भूमि से संबंध

- मूल वासस्थान — मूलवासी लंबे समय से अपने परंपरागत निवास-स्थानों पर रहते आए हैं।
- • भूमि पर अधिकार — वे अपने मूल वासस्थान पर अधिकार की दावेदारी करते हैं।

2. भूमि और आर्थिक संसाधन

- आर्थिक आधार — भूमि मूलवासियों के आर्थिक संसाधनों का प्रमुख आधार है।
- आजीविका — मूलवासियों की विभिन्न जीवन-प्रणालियाँ भूमि पर आधारित हैं।
- भूमि की हानि — भूमि की हानि उनके जीवन के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन

- परंपराएँ — मूलवासी अपनी परंपराओं को महत्त्व देते हैं।
- सांस्कृतिक रिवाज — ये अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं और रिवाजों के अनुसार जीवनयापन करना पसंद करते हैं।
- विशिष्ट जीवन-पद्धति — इनकी विशेष सामाजिक और आर्थिक जीवन-शैली होती है।

4. राजनीतिक अधिकार और माँगें

- स्वतंत्र पहचान — मूलवासी अपनी स्वतंत्र सामुदायिक पहचान की माँग करते हैं।
- बराबरी का दर्जा — ये विश्व-बिरादरी में समान दर्जा प्राप्त करना चाहते हैं।
- मूल वासस्थान — भूमि पर परंपरागत अधिकार इनकी प्रमुख माँगों में शामिल है।

5. विकास परियोजनाओं का प्रभाव

- विस्थापन — भारत में विकास परियोजनाओं के कारण बड़ी संख्या में आदिवासी समुदायों को विस्थापन का सामना करना पड़ा।
- विकास का सीमित लाभ — राजनीतिक प्रतिनिधित्व में संवैधानिक सुरक्षा के बावजूद इन्हें देश के विकास का अधिक लाभ नहीं मिल सका।
- विकास की कीमत — मूलवासी समुदायों ने विकास की बहुत बड़ी कीमत चुकाई है।

6. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से संबंध

- अधिकारों की माँग — मूलवासी अपने संघर्ष, एजेंडे और अधिकारों की आवाज उठाते हैं।
- विश्व-राजनीति — इनकी आवाज विश्व-बिरादरी में बराबरी का दर्जा प्राप्त करने के लिए उठी है।